Title of the Programme	भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन
Type / Nature of the Programme	राष्ट्रीय-कार्यशाला
Organising University / Institution / College	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, कोनी-बिरकोना मार्ग, बिलासपुर 495009
Partner Organisation (NGO / Society)	NA
Name of the Coordinator	डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
E-mail ID and Contact of the Coordinator	singh.jaipal82@gmail.com
Total Number of Participants	60

1. Introduction of the Programme

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन विषयक राष्ट्रीय-कार्यशाला भारतीय भाषाओं में शोध और अकादमिक-लेखन पर केंद्रित था। हमारे देश में नवीन शोध कार्य हो रहे हैं, इससे जो परिणाम आ रहे हैं उससे स्पष्ट है कि हमारी प्राचीन शिक्षा-पद्धति श्रेष्ठ रही है। लेकिन वर्तमान में आधुनिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ विकसित देशों ने जिस गति से आधुनिक शोध और अकादमिक-क्षेत्र में उच्च स्थान हासिल किया है, उसके पीछे उनकी अपने देश की भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, वह चाहे अँग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, चीनी, आदि हों। भाषा किसी भी देश के लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने के साथ-साथ संप्रेषण का प्रमुख साधन होती है। भाषा से किसी भी देश के लोग राष्ट्रीय भावना के रूप में जुड़े रहते हैं। भारतीय भाषाओं में हिंदी एक ऐसा ही उदाहरण है, जिसके माध्यम से हमने स्वाधीनता आंदोलन सपफलतापूर्वक किया और हम ब्रिटिश राज से स्वाधीन हुए। यदि हमें भारत को आधुनिक विज्ञान, तकनीकी तथा अन्य समाज से जुड़े विषयों में अनुसंधान कर के विश्व पटल पर ले जाना है, तो भारतीय भाषाओं का विकास आवश्यक है। भारतीय भाषाओं के उन्नयन, शोध एवं अकादमिक-लेखन में किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा प्रयोग किया जा सकता है, इसी भाव के केंद्र में रखकर इस राष्ट्रीय कार्यशाला के तीन उद्देश्य निर्धारित किए गए-

- पहला, भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक-लेखन का विकास करना।
- दूसरा, वैश्विक ज्ञान में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को समोन्नत बनाना, तथा
- तीसरा, भारतीय भाषाओं के तकनीकी पक्ष पर अनुसंधानपरक व्याख्यान, चिंतन, चर्चा-परिचर्चा कराना।

उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए व्याख्यान और तकनीकी सत्रों में निम्नलिखित विषयों पर कार्यशाला केंद्रित की गई-

- भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास : सूचना प्रौद्योगिकी और अनुसंधान-लेखन
- भारतीय भाषाओं में अकादमिक संसाधनों की उपलब्धता
- भारतीय भाषाओं का मनोविज्ञान और वैज्ञानिक विषयों पर अकादमिक-लेखन की संभावनाएँ
- भारतीय भाषाओं में कृषि-अनुसंधान और आम जन तक पहुँच
- भारतीय भाषाओं में अभियांत्रिकी अनुसंधान-लेखन का विस्तार
- भारतीय भाषाओं में अनुवाद परंपरा
- भारतीय भाषाओं में चिकित्सा-अनुसंधान लेखन की संभावनाएँ
- हिंदी में तकनीकी शब्दावली उपलब्धता और प्रयोग
- नई शिक्षानीति 2020 और भारतीय भाषाओं के विकास का मूलभाव
- भारतीय भाषाओं पर अनुसंधान, प्रयोग और विस्तार

उपर्युक्त विषयों पर राष्ट्रीय कार्यशाला अवधि दिवसों (13-15, फरवरी, 2023) में विभिन्न विषयों पर वक्ताओं/विषय विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, चर्चा-परिचर्चा, आलेख प्रस्तुत किया गया।

2. Schedule of the Programme

तीन दिवसीय

राष्ट्रीय-कार्यशाला

13-15 फरवरी, 2023

प्रथम दिवस : 13 फरवरी, 2023		
समय	सत्र	स्थान
9.30–10:30बजे (पूर्वाह्न)	पंजीयन	विश्वविद्यालय सभागार प्रशासनिक भवन
उद्घाटन सत्र		

10: 30 पूर्वाह्न से12:00 बजे (अपराह्न)	अध्यक्षता : डॉ. बंश गोपाल सिंह, माननीय कुलपति, पण्डितसुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर मुख्य अतिथि : प्रो. सदानंद शाही माननीय कुलपति, शंकराचार्य प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, दुर्ग प्रस्तावना : डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति संचालक : डॉ. अनिता सिंह रिपॉर्टर : डॉ. प्रकृति जेम्स	विश्वविद्यालय सभागार प्रशासनिक भवन, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
12: 00 – 12:15 बजे (अपराह्न)	स्वल्पाहार	सभागार कमरा नं.02 प्रशासनिक भवन
	प्रथम तकनीकी सत्र	
12.15 से 1.30 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास : सूचना प्रौद्योगिकी और अनुसंधान-लेखन** विषय विशेषज्ञ– डॉ. तरुण दीवान संचालक–डॉ. अनिता सिंह व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –डॉ. अनिता सिंह	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
1.30 से 2.00 बजे अपराह्न तक	भोजनावकाश	विश्वविद्यालय विश्राम गृह
	द्वितीय तकनीकी सत्र	
2.00से 3.00 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं में अकादमिक संसाधनों की उपलब्धता** विषय विशेषज्ञ– प्रो. पी. के. वाजपेयी संचालक–डॉ. अनिता सिंह व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –दिव्या सिंह	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
	तृतीय तकनीकी सत्र	
3.00 से 4.30 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं का मनोविज्ञान और वैज्ञानिक विषयों पर अनुसंधान की संभावनाएँ** विषय विशेषज्ञ– प्रो. गिरीश्वर मिश्र संचालक–डॉ. अनिता सिंह व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –रीतिका सोनी	विश्वविद्यालय सभागार प्रशासनिक भवन, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
	द्वितीय दिवस : 14 फरवरी, 2023	
	प्रथम तकनीकी सत्र	
10. 30 बजेपूर्वाह्नसे 12. 00 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं में कृषि-अनुसंधान और आम जन तक पहुँच** विषय विशेषज्ञ– डॉ. आर. के. शुक्ला संचालक–डॉ. रीतिका सोनी व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –सरिता चंद्रवंशी	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
12. 00 से 12.15 बजे अपराह्न तक	चाय अंतराल	सिहावा अकादमिक भवन
	द्वितीय तकनीकी सत्र	
12.15 से 2.00 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं में अभियांत्रिकी अनुसंधान-लेखन का विस्तार** विषय विशेषज्ञ– डॉ. मुकुन्द हम्बर्डे, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान संचालक–डॉ. शिल्पा विनोदनी	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर

	व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –सरिता चंद्रवंशी	
2.00 से 2.30 बजे अपराह्न तक	भोजनावकाश	विश्वविद्यालय विश्राम गृह
	तृतीय तकनीकी सत्र	
2.30 से 4.00 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं में अनुवाद परंपरा** विषय विशेषज्ञ– डॉ. चित्तरंजन कर, प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक संचालक– दिव्या सिंह व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –डॉ. जयपाल सिंह	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
4.00 से 4.15 बजे अपराह्न तक	चाय अंतराल	सिहावा अकादमिक भवन
	चतुर्थ तकनीकी सत्र	
4.15 से 5.15 बजे अपराह्न तक	• **भारतीय भाषाओं में चिकित्सा-अनुसंधान लेखन की संभावनाएँ** विषय विशेषज्ञ– डॉ. रामकृष्ण कश्यम, विरिष्ट चिकित्सक संचालक–डॉ. अनिता सिंह व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –रीतिका सोनी	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
	तृतीय दिवस : 15 फरवरी, 2023	
	प्रथम तकनीकी सत्र	
10.30 बजेपूर्वाह्नसे 12.00 बजे अपराह्न तक	• **हिंदी में तकनीकी शब्दावली उपलब्धता और प्रयोग** विषय विशेषज्ञ– डॉ. सुशील त्रिवेदी, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त, छत्तीसगढ़ संचालक–डॉ. प्रकृति जेम्स व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –दिव्या सिंह	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
12.00 से12.15 बजेअपराह्नतक	चाय अंतराल	सिहावा अकादमिक भवन
	द्वितीय तकनीकी सत्र	
12.15 से 2.15 बजे अपराह्न तक	• **नई शिक्षानीति २०२० और भारतीय भाषाओं के विकास का मूलभाव** विषय विशेषज्ञ– डॉ. शशांक शर्मा संचालक– डॉ. रीतिका सोनी व्यवस्थापक एवं रिपॉर्टर –सरिता चंद्रवंशी	**Room-GH01** सिहावा अकादमिक भवन पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर
2.15 से 3.00 बजे अपराह्न तक	भोजनावकाश	विश्वविद्यालय विश्राम गृह
	समापन सत्र	
3.00 बजे अपराह्न से	अध्यक्षता : डॉ. बंश गोपाल सिंह, माननीय कुलपति, पण्डितसुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर मुख्य अतिथि : डॉ. विनय कुमार पाठक पूर्व अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर विशिष्ट अतिथि : श्री शशांक शर्मा पूर्व निदेशक, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर प्रतिवेदन : डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति संचालक : डॉ. अनिता सिंह रिपॉर्टर : डॉ. प्रकृति जेम्स	विश्वविद्यालय सभागार प्रशासनिक भवन, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,बिलासपुर

3. Brochure (if any) and Posters / Banners / Flyers of the Programme

परामर्शदाता

डॉ. के. एल. वर्मा

कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
पूर्व अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग,
निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

पंजीयन-प्रपत्र

शोधार्थी पंजीकरण के लिए पंजीयन प्रपत्र गूगल फॉर्म https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLScuIQIT EZeeLtU181tDrw5B8x2LTu9xlh1IBMXggU7H9eyz7w/viewform?usp=sf_link या हार्ड कॉपी साईड www.pssou.ac.in से डाउनलोड कर सकते है। पंजीयन-प्रपत्र की छायाप्रति का उपयोग भी किया जा सकता है, भरा हुआ पंजीयन-प्रपत्र पंजीयनकर्ता के पास अनिवार्यतः जमा करें।

पंजीयन निःशुल्क है।

- कृषि, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, प्रबंधन तथा विज्ञान के अन्य विषयों के प्रतिभागियों (शोधार्थियों) को पंजीयन में प्राथमिकता दी जाएगी।
- पंजीकृत प्रतिभागियों की तीन दिवस (कार्यशाला अवधि) उपस्थिति अनिवार्य है।
- प्रत्येक पंजीकृत प्रतिभागी को पैड, पेन कार्यक्रम अनुसूची तथा तीन दिवस दोपहर का भोजन निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा।
- पंजीयन प्रतिभागियों को यात्रा-व्यय देय नहीं होगा, आवास सशुल्क उपलब्ध कराया जा सकेगा।
- प्रमाण-पत्र पंजीकृत प्रतिभागियों को ही प्रदान किया जाएगा।

संरक्षक

डॉ. वंश गोपाल सिंह

कुलपति, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सह-संरक्षक

श्री चमु कृष्ण शास्त्री

अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

डॉ. इन्दु अनंत

कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

आयोजक समिति

डॉ. शोभित वाजपेयी	- 9425230007
डॉ. बीना सिंह	- 7898484846
डॉ. प्रकृति जैन	- 9993450848
डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	- 7898484846
डॉ. राम लाल प्रधान	- 7898484846
डॉ. संजीव कुमार ...वंशी	- 7898484846
डॉ. एस. रूपेन्द्र राव	- 7898484846
डॉ. पुष्कर दुबे	- 7898484846
डॉ. सोमनाथ त्रिपाठी	- 9425543083
डॉ. वर्षा ...नाथ	- 7000475114
श्री प्रवीण टोप्पो	- 7748014451

प्रति,

तीन दिवसीय

राष्ट्रीय-कार्यशाला

13-15 फरवरी, 2023

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन

भारतीय भाषा समिति
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
तथा

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजक

हिंदी-विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

संयोजक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष, हिंदी
मोबा. 9229703255

सह-संयोजक
डॉ. अनिता सिंह
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
मोबा. 9827118808

विश्वविद्यालय का परिचय :

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्र. 26/2004 द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय का नाम स्वतंत्रता सेनानी, अहिंसावादी, समता एवं सामाजिक न्याय के युगपुरुष एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के नाम से सुविख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (1881-1940 ई.) जी के नाम पर है। यह एक शासकीय राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, जिसका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। विश्वविद्यालय का मुख्यालय बिलासपुर, छः क्षेत्रीय-केंद्र-रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, अम्बिकापुर, जशपुर, जगदलपुर, तथा एक उप-क्षेत्रीय कार्यालय कांकेर है। विश्वविद्यालय के सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में 138 अध्ययन-केंद्र संचालित है जिनमें वनांचल बस्तर (अबूझमाड़) सरगुजा, जशपुर जैसे दुरस्थ आदिवासी क्षेत्रों के विद्यार्थी भी अध्ययनरत् है। विश्वविद्यालय इन केंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के आधार पर गुणवत्तायुक्त उच्च-शिक्षा प्रदान कर रहा है।

बिलासपुर :

यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, यहाँ छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय है। इसे न्याय और संस्कारधानी के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का मुख्यालय बिलासपुर में है। शिक्षा और आतिथ्य के लिये तत्पर इस समृद्ध शहर की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, और प्राकृतिक सुंदरता की अनुपम छटा देखने लायक है।

पर्यटन स्थल :

- रतनपुर (माँ महामाया मंदिर) 26 कि.मी.।
- तालागाँव (प्राचीन देवरानी- जेठानी मंदिर) 40 कि.मी.।
- मल्हार (पातालेश्वर, डिडिनेश्वरी मंदिर) 40 कि.मी.।
- मैनपाट/कोटा? (छत्तीसगढ़ का कश्मीर) 65 कि.मी.।
- गिरौदपुरी (संत गुरुघासीदास की जन्मस्थली) जैत खाम्भ (कुतुब मीनार से ऊँचा) 62 कि.मी.।

पहुँच मार्ग :

- **सड़क/रेल:** बिलासपुर, रेल-सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ। मुंबई-नागपुर-हावड़ा रेल मार्ग पर स्थित है, समीप ही रेल्वे स्टेशन उसलापुर भी है।
- **हवाई मार्ग:** निकटतम हवाई अड्डा (बिलासा देवी केवट हवाई अड्डा) चकरभाठा, बिलासपुर।
  निकटतम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (स्वामी विवेकानन्द हवाई अड्डा) रायपुर है जिसकी बिलासपुर से दूरी 125 कि.मी. है।

कार्यशाला के विषय में :

भारतीय भाषाएँ और विशेषतः तकनीकी दृष्टि से सुसम्पन्न है। भारतीय भाषाएँ तकनीकी विषयों-चिकित्सा, अभियांत्रिकी, अंतरिक्षविज्ञान, खगोलविज्ञान इत्यादि अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रही है। भारतीय भाषाएँ तकनीकी उन्नति के समानान्तर लोगों के दैनिक जीवन के सुचारू संचालन के लिए सरल, सहज और ग्राह्य भाषाएँ है, इनमें शोध एवं अकादमिक-लेखन की अपार सम्भावनाएँ है। विश्व में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं को बोलने-समझने-लिखने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है, आशा की जानी चाहिए कि भविष्य में हिंदी विश्वभाषा बनेगी। हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं (असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मैथिली, संथाली, डोगरी, और बोडो) सहित अन्य क्षेत्रीय बोलियाँ प्रचलित है, जो जनसामान्य के संप्रेषण का प्रमुख माध्यम है।

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन के विस्तार के लिए हमें भाषा के दो पक्षों पर ध्यान देना होगा, पहला भारत में प्रचलित भाषाओं की पहचान करना, क्योंकि बहुसंख्यकों की मातृभाषाएँ यही है, जिनका शोध एवं अकादमिक क्षेत्र में उपयोग अपेक्षित है। दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास। मानव विकास के साथ भाषाओं के प्रयोग का स्वरूप बदलता है, साथ ही शिक्षण और अनुसंधान की परम्परागत पद्धतियाँ भी बदली है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं उन्नत तकनीकी से शैक्षणिक, अकादमिक तथा अनुसंधान के कार्यों में भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ा है, लेकिन उतना नहीं, जितना कि अपेक्षा की जा रही थी। भारतीय भाषाओं हिंदी, मराठी, तमिल, तेलगु, मलयालम, कश्मीरी, उड़िया, बंगाली, छत्तीसगढ़ी जैसी अनेक भाषाओं और विश्व की अन्य भाषाओं अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, मंदारिन आदि के बीच तकनीकी स्तर पर अनुवाद की समस्याएँ अभी भी बनी हुई है। इन समस्याओं का समाधान आवश्यक है, ताकि कृषि, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर शोध और अकादमिक-लेखन को बढ़ावा मिल सके।

जब हम विषय विशेष (Purticaular Subject) जैसे-चिकित्सा, अभियांत्रिकी, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन सहित अन्य विज्ञान के विषयों पर शोध एवं अकादमिक-लेखन की बात करते है, तो अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन जैसी भाषाओं में हो रहे शोध से एक सीमा तक पिछड़े दिखायी देते है। नवीन शोध का भारतीय जनमानस तक नहीं पहुँच पाने के पीछे एक कारण नवीन शोधों का भारतीय भाषाओं में लेखन नहीं होना भी है। नई शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना के अनुरूप यह आशा की जानी चाहिए कि भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन से अभिभावकों को नवीन अनुसंधान से प्राप्त लाभ आसानी से मिल सकेंगे। भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन से हम अपनी भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने के साथ-साथ समाज और राष्ट्र को सुदृढ़, समृद्ध बनाने के महान लक्ष्य को पा सकेंगे।

कार्यशाला का उद्देश्य :

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन विषय पर प्रस्तावित यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय-कार्यशाला में हिंदी तथा अन्य भाषाओं में अनुसंधान एवं अकादमिक-लेखन के वैज्ञानिक तथा तकनीकी पक्षों पर महत्वपूर्ण व्याख्यान, शोध-पत्र/आलेख-वाचन तथा चर्चा-परिचर्चा से भारतीय भाषाओं के उन्नयन को नई दिशा मिलेगी। अनुसंधान एवं अकादमिक क्षेत्र में हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ सकेगा।

प्रस्तावित विषय वस्तु :

- भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक विरासत तथा वर्तमान स्वरूप।
- भारतीय भाषाओं पर अनुसंधान, प्रयोग और विस्तार।
- भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास : सूचना प्रौद्योगिकी और अनुसंधान-लेखन।
- भारतीय भाषाओं में अकादमिक संसाधनों की उपलब्धता।
- भारतीय भाषाओं में कृषि-अनुसंधान और आम जन तक पहुँच।
- भारतीय भाषाओं में चिकित्सा अनुसंधान-लेखन की सम्भावनाएँ।
- भारतीय भाषाओं में अभियांत्रिकी अनुसंधान-लेखन का विस्तार।
- भारतीय भाषाएँ और अनुवाद संपदा।
- भारतीय भाषाओं का मनोविज्ञान और वैज्ञानिक विषयों पर अकादमिक-लेखन की सम्भावनाएँ।
- नई शिक्षानीति 2020 और भारतीय भाषाओं के विकास का मूल्यभाव।
- हिंदी में तकनीकी शब्दावली उपलब्धता और प्रयोग की समस्याएँ।
- मूल विषय से संबंधित अन्य विषय।

शोध-पत्र/आलेख/पंजीयन :

इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध-पत्र/आलेख सारांश हिंदी में (Kurti Dev 010 Font Size-14) 300 शब्दों में seminarchdhindi2017@gmail.com 10 फरवरी 2023 तथा पूर्ण शोध-पत्र/आलेख 11 फरवरी 2023 सायं 5.30 बजे तक भेजें। 11 फरवरी पश्चात प्राप्त शोध-पत्र/आलेख पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे शोध-पत्र/आलेख प्रेषण की सूचना डॉ. अनिता सिंह दूरभाष 9827118808 को एसएमएस पर अनिवार्यतः देंवे। शोध-पत्र/आलेख मौलिक होना चाहिए। पंजीकृत (निःशुल्क पंजीयन) 50 प्रतिभागियों की अंतिम सूची 11 फरवरी 2023 को रात्रि 11.59 बजे तक जारी की जाएगी।

विश्वविद्यालय सभागार एवं तकनीकी सभागार हेतु (आकार 12x5 फिट)

तीन दिवसीय

राष्ट्रीय-कार्यशाला

13-15 फरवरी, 2023

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन

भारतीय भाषा समिति
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
तथा

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजक

हिंदी-विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़,
बिलासपुर

प्रतिभागियों हेतु फोल्डर, पैड, पेन, भोजन, स्वल्पाहार टोकन, सेडयूल

4. Summary of the Programme

प्रथम दिवस, प्रथम दिवस, दिनांक 13 फरवरी, 2023 सुबह 10.30 बजे राष्ट्रीय-कार्यशाला उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह जी की अध्यक्षता में माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर राष्ट्रीय-कार्यशाला आरंभ हुई। माननीय कुलपति जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि अपनी संस्कृति, भाषा पर हमें गर्व होना चाहिए। हिंदी सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग हमें एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से भी जोड़ती हैं। भारतीय भाषाओं में अनेक प्रदेशों में अच्छे कार्य हो रहे हैं, चिकित्सा और अभियांत्रिकी जैसे विषय आज हिंदी में संचालित किए जा रहे हैं। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि भाषा को जितना सरल, सहज बना कर वैज्ञानिक विषयों को हम प्रस्तुत कर पाएँ, वह उतना ही देशहित में होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 से उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले समय में भारतीय भाषाओं में शोध सामग्री की उपलब्धता बढ़गी। मुझे पूरा विश्वास है कि यह कार्यशाला भारतीय भाषाओं के विकास में मील का पत्थर साबित होंगी।

प्रो. शोभित बाजपेयी ने हिंदी में विषयों के शोध-लेखन की महत्ता बताते हुए इस बात पर बल दिया कि हिंदी जिस गति से वैश्विक धरातल पर प्रगति कर रही है, इससे हिंदी के वैश्विक भाषा बनने की कल्पना हम अब साकार होते देखना चाहेंगे। उन्होंने कहा कि यदि हम भारत के विभिन्न राज्यों, प्रांतों में जाए, तो वहाँ की स्थानीय बोली, भाषा भी संमृद्ध मिलेगी। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारे देश की जितनी भी बोलियाँ अथवा भाषाएँ हैं, उनका एक बड़ा समाज भी है, जो उस बोली या भाषा का प्रयोग करता है। आप कल्पना कीजिए कि उनकी इन भाषाओं में शोध होने लगे, तो उनकी भाषा, समाज, संस्कृति के अलावा उनके औषधीय ज्ञान, चिकित्सा पद्धति, सामाजिक बनावट, कृषि आदि की उनके अपने द्वारा विकसित पद्ध्तियाँ भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में आ सकती हैं, इनके आ जाने से हमारा देश विकास के पथ पर निश्चित ही आगे बढ़ेगा।

डॉ. तरुणधर दीवान ने हिंदी तथा अन्य भाषाओं के कंप्यूटर ज्ञान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने भाषा के तकनीकी के विकास का रोड मैम बताया। उनके अनुसार हम इतिहास के पन्नों में जो भी अनुसंधानात्मक जानकारी हासिल करना चाहते हैं, आज उसकी अधिकतर सामग्री हमें ई-सोर्स से प्राप्त कर सकते हैं।

प्रो. पी.के वाजपेयी ने भारतीय भाषाओं में भारोपीय समूह की संस्कृत के वैज्ञानिक पक्ष को उद्घाटित करते शोध हेतु उपलब्ध सामग्री का प्रयोग अपने लेखन पर करने पर बल दिया। भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं का सीधा संबंध जनजीवन से भी है, इसलिए जब हम संसाधनों की बात करेगें तो भारतीय परिप्रेक्ष्य में चर्चा किया जाना प्रासंगिक होगा। भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान जैसे विषय आज प्राचीन काल से भारतीय भाषाओं में पढ़ाए जाते थे, हमारी अपनी भाषाओं में इन विषयों में शोध कार्य होते रहे हैं।

डॉ. गिरीश्वर मिश्र ने भारतीय भाषाओं के मनोविज्ञान को बताया। उन्होंने कहा भारतीय भौगोलिक स्थिति के आधार पर कई भाषाई-क्षेत्र हैं, सबकी अपनी मातृभाषा है, संस्कृति है, समाज है। जब हम भारतीय भाषाओं की बात करते हैं, तो सबसे पहले तो हमें इस बात का ध्यान रखना होगा की हम जिस विषय पर शोध या अकादमिक-लेखन की बात कर रहे हैं, वह किस के लिए

किया जा रहा है? जब हम यह निर्धरित कर के काम करेंगे, तो हमें उन्हीं की भाषा/बोली में शोध करना लाभप्रद इसलिए लगेगा क्योंकि हम अपने देश के लोगों के लिए काम कर रहे होंगे। हमारे देश के किसी भी प्रांत को ले लें तो अँग्रेज़ी जैसी भाषा में किये शोध का मतलब बहुत कम लोग जान पाते हैं, हाँ शोध के कारण बने उत्पाद का लोग उपभोग ज़रूर कर लेते हैं, या कहें उसका उपयोग कैसे किया जाना है उसे धीरे-धीरे सीख लेते हैं। मान लीजिए बनाने के विधि जान ले तो हो सकता है वे लोग अपने आसपास की चीजों से भी कुछ वैसा ही नया बना लें, जो वे महगे दामों में खरीदते हैं।

डॉ. चित्तरंजन कर ने भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक पक्ष पर व्याख्यान केंद्रित करते हुए कहा कि विश्व की कोई भी भाषा का विकास मनुष्य के लिए हुआ है, लेकिन उसका प्रयोग कैसे किया जाना है यह हमें ही निर्धारित करना है। हमारे देश में बोली जाने वाली कोई भी बोली या भाषा इसलिए अच्छी है क्योंकि उसे बोलने वाले हैं, समझने वाले हैं। कोई भी शोध हो उसमें यदि वहाँ के लोगों की भाषा को आधार बनाया जाएगा तो, शोध महत्व का हो सकेगा। संस्कृत, हिंदी और भी अन्य भाषाएँ पूर्व रूप से वैज्ञानिक इसलिए हैं, क्योंकि जैसी बोली जाती हैं, वैसी लिखी जाती हैं।

प्रो. आर.के वर्मा जी ने कृषि क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बताया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हम जब किसी भी फसल के बारे में बात तभी कर सकते हैं, जब हमें वहाँ की भाषा की जानकारी हो। आज हमारा देश कृषि संपन्न इसलिए है क्योंकि हम लोगों तक कृषि उपकरण, उन्नत बीज, कीटनाशक, इत्यादि के बारे में एक आम किसान तक उसकी भाषा में पहुँचाने में सफल हुए हैं, कृषि चौपाल जैसे कार्यक्रम से किसान साथी हमसे बड़े आसानी से जुड़ जाते हैं। कृषि वैज्ञानिक किसानों तक अपनी बातों को पहुँचाने के लिए गाँव के प्रमुख और सरपंचों की मदद से किसानों की भाषा में अनुवाद कराकर अपनी बातों को उन तक पहुँचा हैं।

डॉ. आर. के. कश्यप ने चिकित्सा के क्षेत्र में उपयोग होने वाले तकनीकी की जानकारी दी। उन्होंने कहा हम जब किसी मरीज से कुछ पूछते हैं, तो उसकी बोली में बोले तो वह सहज रूप से अपने बारे में बताता है, इससे हमें उसके ईलाज आसानी होती है। मध्य प्रदेश देश का ऐसा राज्य है जहां चिकित्सा शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा में शिक्षण होने लगा है, भारतीय भाषाओं की आवश्यकता इसलिए भी आज जरूरी है।

श्री शशांक शर्मा जी ने नई शिक्षा नीति 2020 और भारतीय भाषाओं के विकास का मूलभाव, स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के बारे में ससंदर्भ व्याख्यान दिया। भाषा के लिए अध्ययन, मनन और अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है यदि यही हमारी अपनी भाषा में की जाए तो यही विषयवस्तु विद्यार्थी और समाज के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

डॉ. विनय पाठक साहब द्वारा त्रिपुरा, अगरतला, मैसूर, गुवाहाटी आदि का उदाहरण देकर भाषा व बोली के आंकड़ें प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान में भाषा पर अनुसंधान की आवश्यकता है। अभी इसमें अनुसंधान बहुत नगण्य है। निकट भविष्य में इसकी नितांत आवश्यकता होगी। डॉ. मुकुन्द हम्बर्डे ने अभियांत्रिकी और डॉ. सुशील त्रिवेदी ने हिंदी में तकनीकी शब्दावली उपलब्धता और प्रयोग पर आलेख प्रस्तुत किए।

दिनांक 15 फरवरी, 2023 को शाम चार बजे समापन सत्र में कार्यशाला के संयोजक डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति ने संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रतिभागी डॉ. नंदनी तिवारी ने कार्यशाला के विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें इस तीन दिवसीय

राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने के बाद ऐसा लग रहा है कि 'आइए हम सब फिर से पहले की ओर लौट चले', प्रतिभागी श्री प्रताप कुमार साहू ने हुए कहा कि कार्यशाला में कि बिन्दुओं पर सारगर्भित व्याख्यान, चर्चा से ज्ञान में वृद्धि के साथ ही कार्यशाला के रोमांचक और अविस्मणीय सत्रों के लिए संयोजक का आभार व्यक्त करते हुए कहा आपने ऐसे विद्वानों का चुनाव किया, जिन्होंने भारतीय भाषाओं में शोध और अनुसंधान-लेखन की बारीक कड़ियों को बताया, इसके लिए आप लोगों का धन्यवाद। संयोजक ने सभी अतिथियों, विषय विशेषज्ञों, भारतीय भाषा समिति के अध्यक्ष, माननीय श्री चमुकृष्ण शास्त्री, शैक्षिक समन्वयक डॉ. चंदन श्रीवास्तव, सहित सभी का आभार जताया। उन्होंने कहा इस पुनीत कार्य के लिए हमें भारतीय भाषा समिति ने न केवल वित्तीय सहयोग दिया अपितु एक सकारात्मक और आत्मीय सहयोग से हमने इस कार्यशाला का सफल आयोजन कर पाए हैं। सभी अतिथियों, विषय विशेषज्ञों का शाल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न तथा मानदेकर देकर सम्मान किया गया।

5. List of invited Resource Persons

क्र.	नाम	पद एवं पता	दूरभाष
1.	डॉ. तरुणधर दीवान	विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, बिलासपुर	9893110440
2.	प्रो. पी. के. वाजपेयी	संकायाध्यक्ष, भौतिक विज्ञान, गुरुघासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलापुर	9425230007
3.	प्रो. गिरीश्र मिश्र	पूर्व कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, एवं प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक, लेखक	9922399666
4.	डॉ. आर. के. शुक्ला	प्राध्यापक, इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर	9425540818
5.	डॉ. मुकुन्द हम्बर्डे,	पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, रायपुर	738948746
6.	डॉ. चित्तरंजन कर	पूर्व कला संकायाध्यक्ष एवं भाषावैज्ञानिक, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर	9137448971
7.	डॉ. रामकृष्ण कश्यप	विरिष्ठ चिकित्सक, बिलासपुर	8827387853
8.	डॉ. सुशील त्रिवेदी	छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त,	982644434
9.	डॉ. विनय कुमार पाठक	पूर्व अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर	9229879898
10.	डॉ. शशांक शर्मा	पूर्व निदेशक, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर	942520531

6. Representative Photos of the Programme

माननीय कुलपति डॉ. बंशगोपाल सिंह जी द्वारा दीप माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष प्रज्जलित कर कार्यशाला का शुभारंभ

माननीय कुलपति डॉ. बंशगोपाल सिंह जी का पुष्पपौध से स्वागत

वक्ता का पुष्पपौध से स्वागत

राष्ट्रीय कार्यशाला के संयोजक डॉ. जयपाल सिंह द्वारा कार्यशाला का उद्देश्य और प्रस्तावना की प्रस्तुति

माननीय कुलपति डॉ. बंशगोपाल सिंह जी अध्यक्षीय उद्‌बोधन

उद्‌घाटन.सत्र में प्रतिभागी

उद्घाटन.सत्र में प्रतिभागी

उद्घाटन.सत्र में प्रतिभागी

उद्घाटन.सत्र

विषय विशेषज्ञ का शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न देकर सम्मान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान पश्चात्य शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न देकर सम्मान

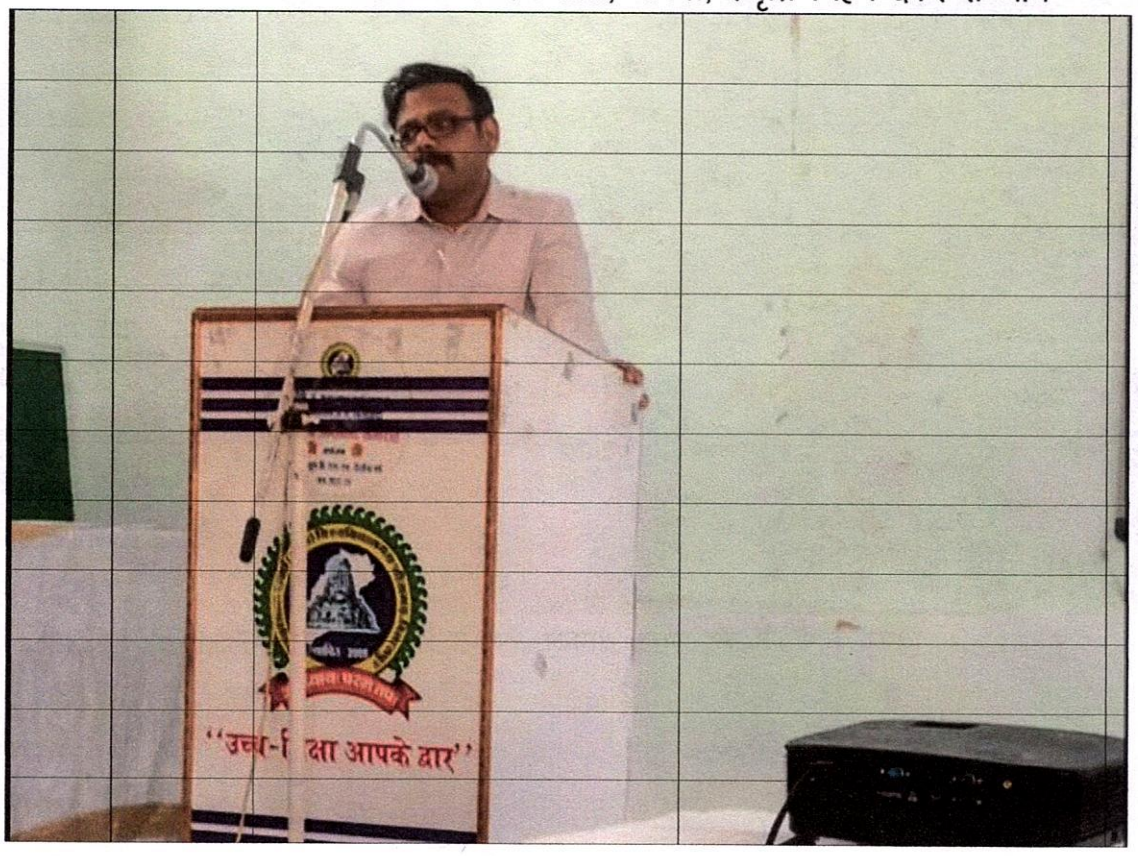

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान पश्चात्य प्रतिभागियों से प्रश्नोत्तरीय

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान पश्चात्य शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न देकर सम्मान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान पश्चात्य शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न देकर सम्मान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान पश्चात्य शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न देकर सम्मान

विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान पश्चात्य प्रतिभागियों से प्रश्नोत्तरीय

समापन-सत्र में माननीय कुलपति, कुलसचिव तथा सम्मानीय अतिथिगण

मुख्य अतिथि का पुष्पपौध देकर स्वागत

विशिष्ट अतिथि का पुष्प पौध देकर स्वागत

कुलसचिव डॉ. इन्दु अनंत जी का पुष्पपौध देकर स्वागत

संयोजक डॉ. जयपाल सिंह द्वारा कार्यशाला पालन प्रतिवेदन की प्रस्तुति

माननीय कुलपति डॉ. बंशगोपाल सिंह जी द्वारा समापन-सत्र पर संबोधन

मुख्य अतिथि जी द्वारा समापन-सत्र पर संबोधन

माननीय कुलपति जी द्वारा मुख्य अतिथि का शाल श्रीफल तथा स्मृति-चिह्न देकर सम्मान

माननीय कुलपति जी द्वारा विशिष्ट अतिथि का शाल श्रीफल तथा स्मृति.चिह्न देकर सम्मान

प्रतिभागी द्वारा कार्यशाला का अनुभव प्रस्तुति

प्रतिभागी द्वारा कार्यशाला का अनुभव प्रस्तुति

राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रतिभागीगण

7. Newspaper Clippings of the Media Coverage of the Programme

प्रथम दिवस 13 फरवरी, 2023 **राष्ट्रीय समाचार-पत्र नई दुनिया**

क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग में न हों हीन भावना से ग्रसित : कुलपति

बिलासपुर(नईदुनिया न्यूज)। पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय एवं भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय के संयुक्तत्वावधान में 13 से 15 फरवरी तक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति डा. वंश गोपाल सिंह ने की।

प्रारंभ में कार्यशाला संयोजक डा. जयपाल सिंह प्रजापति ने बताया कि भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक लेखन विषयक इस कार्यशाला में देश के विभिन्न स्थानों से आए प्रतिभागी भारतीय भाषाओं सहित देश की अन्य भाषाओं में शोध एवं अकादमिक लेखन की बारीकियों को विस्तार से समझ सकेंगे। प्रारंभिक तकनीकी सत्र में भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास सूचना प्रौद्योगिकी और अनुसंधान लेखन और भारतीय भाषाओं में अकादमिक संसाधनों की उपलब्धता पर व्याख्यान और चर्चा-परिचर्चा होनी है। इसी तरह तीनों दिन कृषि, चिकित्सा, अनुवाद, तकनीकी शब्दावली, नई शिक्षा नीति 2020 जैसे विषयों पर व्याख्यान होगा। वहीं अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति ने कहा जब दूसरे देश अपनी संस्कृति, भाषा पर गर्व करते दिखते हैं, वहीं हम हिंदी साहित्य अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग करने में क्यों हीन भावना से ग्रसित दिखायी दे रहे हैं? हमें इस पर विचार करना चाहिऐ। भारतीय भाषाओं में अनेक प्रदेशों में अच्छे कार्य हो रहे हैं, हमारे पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश में ही चिकित्सा और अभियांत्रिकी जैसे कठिन समझे जाने वाले विषयों की पाठ्यसामग्री हिंदी में लिखी गई है। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि भाषा को जितना सरल, सहज बना कर विषयों को पाठकों तक प्रस्तुत कर पाए तो वह अच्छी बात होगी, नई शिक्षा नीति से यह संभावना बलवती दिख रही है। आने वाले समय में भारतीय भाषाओं में शोध सामग्री की उपलब्धता बढ़ेगी। प्रो शोभित वाजपेयी ने भाषायी विकास को रेखांकित करते हुए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के क्षेत्रीय विकास और उन भाषाओं, बोलियों का जनजीवन के संबंध को बताया।

तकनीकी सत्र में डॉ. तरुण दीवान ने कंम्पुटर और भाषा के सहसंबंध पर व्याख्यान दिया। उन्होंने भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों को बताते हुए इस बात पर जोर दिया किया कि हम जब शोध के लिए भारत की किसी भी भाषा का प्रयोग करते है, तो आज की तारीख में उसकी अपार संभावनाएं हैं। प्रो. पीके वाजपेयी ने बताया कि हमें भारतीय भाषाओं में अकादमिक संसाधनों की उपलब्ध सामग्री का प्रयोग अपने शोध और अकादमिक लेखन में करना ही चाहिए। भाषा का संबंध केवल शोध और अकादमिक से भर है ऐसा नहीं बल्कि भाषा चाहे विश्व कि किसी भी भाषा की बात कर लीजिए उसका संबंध आमजन से भी होता है।

कार्यक्रम में कुलपति का किया गया स्वागत • नईदुनिया

राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रतिभागीगण

राष्ट्रीय कार्यशाला

समाचार पचीसा
रायपुर, शुक्रवार 16 फरवरी 2023

भारतीय भाषाओं में अकादमिक लेखन पर राष्ट्रीय कार्यशाला

बिलासपुर। समापन सत्र के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह जी ने कहा कि जो व्यक्ति स्थानीय, भाषा और संस्कृति को बिना किसी अवरोध के प्रस्तुत करता है, तो वह सबसे मौलिक कार्य करता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया किया कोई भी व्यक्ति किसी भी भाषा, संस्कृति को सहजने का कार्य कर रहा है, तो वह एक तरह से समाज को भी सहेजने, समाज का बेहतर निर्माण करने का कार्य भी कर रहा होता है।

कार्यशाला के तीसरे दिन प्रथम तकनीकी सत्र नई शिक्षानीति 2020 और भारतीय भाषाओं के विकास का मूलभाव विषय पर डॉ. शशांक शर्मा, पूर्व निदेशक, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जिन छात्रों में भाषा ज्ञान, अध्ययन, मनन, अभिव्यक्ति एवं नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों का समावेश है, वह किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। उन्होंने नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति 2020, 102 पेज की है जिसमें 14 पेज अर्थात 13 प्रतिशत भाषा पर है।

इससे समझा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं पर इतना अधिक जोर क्यों दिया गया है। इसका मूल कारण है भाषा के प्रति लोगों को बताना कि हम जिस भी विषय क्षेत्र में कार्य करें उसकी पहली कड़ी भाषा है, भाषा मनुष्य की सार्थकता को सिद्ध करता है, उन्होंने आगे हिंदी के विकास को रेखांकित करते हुए बताया कि भारतेन्दु हरिशचंद जी ने भी भाषायी समातना पर बल दिया था। उनके अनुसार यदि हमने अपनी आने वाली पीढ़ी को भाषायी शिक्षा नहीं दी तो फिर यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी होगी। इससे देश का सर्वांगीण विकास बाधित होगा, जिससे सामाजिक विकास में भी प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि छठवीं से आठवीं तक के विद्यार्थियों को भाषा का महत्व बताना आज बहुत महत्वपूर्ण है, यह आवश्यक भी है। हम यदि यह सोचे कि इन बच्चों को भाषा ज्ञान के बिना उनका विकास कर लेंगे तो मैं समझता हूँ कि यह सही नहीं होगा, मेरा मानना तो यह है कि उन्हें अपनी मातृभाषा, हिंदी तथा संस्कृत से अवगत कराना हमारा प्रथम उद्देश्य होना चाहिए।

अंतिम तकनीकी सत्र मे डॉ. विनय कुमार पाठक पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर ने भारतीय भाषाओं में शोध और अकादमिक लेखन में भारतीय भाषाओं में अनुसंधान का विस्तार विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा खोज वह साधन है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। प्राचीन काल में ऋषि-मुनी द्वारा की गई साधना शोध का ही एक रूप थी। आज हम खोजे हुए को खोजते है, वहीं अनुसंधान या रिसर्च है, उनके अनुसार भाषा में संस्कृत मूलभाव है तथा संस्कृति उसी से उत्पन्न हुई हैं।

स्थानीय भाषा और संस्कृति को आगे बढ़ाना सबसे मौलिक कार्य – डॉ . बंश गोपाल

By **fourthline** - February 16, 2023 · 29 · 0

0 Fans LIKE
3,732 Followers FOLLOW
0 Subscribers SUBSCRIBE
- Advertisement -

Contact : 98271-90018, 90399-69828, 70007-88531

जीवन के हर क्षेत्र की पहली

कड़ी है भाषा – डॉ. शर्मा

बिलासपुर । पं सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

समापन सत्र के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह ने कहा कि जो व्यक्ति स्थानीय, भाषा और संस्कृति को बिना किसी अवरोध के प्रस्तुत करता है, तो वह सबसे मौलिक कार्य करता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया किया कोई भी व्यक्ति किसी भी भाषा, संस्कृति को सहजने का कार्य कर रहा है, तो वह एक तरह से समाज को भी सहेजने, समाज का बेहतर निर्माण करने का कार्य भी कर रहा होता है।

कार्यशाला के तीसरे दिन प्रथम तकनीकी सत्र नई शिक्षानीति 2020 और भारतीय भाषाओं के विकास का मूलभाव विषय पर डॉ. शशांक शर्मा, पूर्व निदेशक, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जिन छात्रों में भाषा ज्ञान, अध्ययन, मनन, अभिव्यक्ति एवं नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों का समावेश है, वह किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। उन्होंने नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति 2020, 102 पेज की है जिसमें 14 पेज अर्थात 13 प्रतिशत भाषा पर है। इससे समझा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं पर इतना अधिक जोर क्यों दिया गया है। इसका मूल कारण है भाषा के प्रति लोगों को बताना कि हम जिस भी विषय क्षेत्र में कार्य करें उसकी पहली कड़ी भाषा है, भाषा मनुष्य की सार्थकता को सिद्ध करता है, उन्होंने आगे हिंदी के विकास को रेखांकित करते हुए बताया कि भारतेन्दु हरिशचंद्र जी ने भी भाषायी समानता पर बल दिया था। उनके अनुसार यदि हमने अपनी आने वाली पीढ़ी को भाषायी शिक्षा नहीं दी तो फिर यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी होगी। इससे देश का सर्वांगीण विकास बाधित होगा, जिससे सामाजिक विकास में भी प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि छठवीं से आठवीं तक के विद्यार्थियों को भाषा का महत्व बताना आज बहुत महत्वपूर्ण है, यह आवश्यक भी है। हम यदि यह सोचे कि इन बच्चों को भाषा ज्ञान के बिना उनका विकास कर लेंगे तो मैं समझता हूँ कि यह सही नहीं होगा, मेरा मानना तो यह है कि उन्हें अपनी मातृभाषा, हिंदी तथा संस्कृत से अवगत कराना हमारा प्रथम उद्देश्य होना चाहिए।

अंतिम तकनीकी सत्र में डॉ. विनय कुमार पाठक पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर ने भारतीय भाषाओं में शोध और अकादमिक लेखन में भारतीय भाषाओं में अनुसंधान का विस्तार विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा खोज वह साधन है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। प्राचीन काल में ऋषि-मुनी द्वारा की गई साधना शोध का ही एक रुप थी। आज हम खोजे हुए को खोजते है, वही अनुसंधान या रिसर्च है, उनके अनुसार भाषा में संस्कृत मूलभाव है तथा संस्कृति उसी से उत्पन्न हुई हैं। भारतीय भाषा और आंचलिक भाषा सदैव महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि गुवाहाटी अर्थात् सुपारी के बाजार, अगरतला अर्थात अगर के सर्वाधिक वृक्ष से उत्पन्न शब्द हैं, ऐसे अनेक शब्द हैं जो हमारी भूगोल, पर्यावरण तथा समाज से संबंध स्थापित करते हैं, इनका मूल भाव स्थानीयता से जुड़ा हुआ है, इसलिए शब्दों कि व्युत्पति में भी यही मुख्य हैं। उन्होंने कहा नई भारतीय पीढ़ी को समावेशी भाषा पर शोध करने की विशेष रुप से आवश्यकता है, जिससे भारतीय भाषाओं में शोध को और अधिक समोन्नत बनाया जा सके।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति ने संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रतिभागी डॉ. नंदनी तिवारी ने कार्यशाला के विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने के बाद ऐसा लग रहा है कि 'आइए हम सब फिर से पहले की ओर लौट चलें', प्रतिभागी श्री प्रताप कुमार साहू ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला में कई बिन्दुओं पर सारगर्भित व्याख्यान, चर्चा से ज्ञान में वृद्धि हुई साथ ही कार्यशाला के रोमांचक और अविस्मणीय सत्रों के लिए संयोजक, सह-संयोजक का आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा कि आपने ऐसे विद्वानों का चुनाव किया जिन्होंने भारतीय भाषाओं में शोध और अनुसंधान-लेखन की बारीक कड़ियों को बताया, इसके लिए आप लोगों का धन्यवाद। इस तीन दिवसीय राष्ट्रीयकार्यशाला कि सह संयोजक डॉ. अनिता सिंह रही। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिकारी, प्राध्यापक, प्रतिभागी मौजूद थे।

TAGS

EDITOR PICKS

31 हजार लोगों तक पहुंची सर्वे टीम, मिले 137 कुष्ठ रोगी , चलता रहेगा...

fourthline - December 8, 2022

कोरिया, सरगुजा में भूकंप के झटके, घरों से निकले

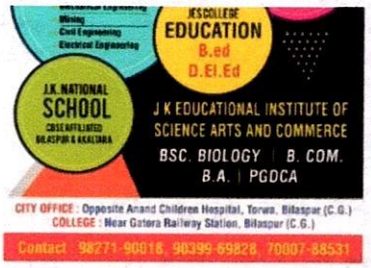

EDITOR PICKS

31 हजार लोगों तक पहुंची सर्वे टीम, मिले 137 कुष्ठ रोगी , चलता रहेगा...

fourthline - December 8, 2022

कोरिया, सरगुजा में भूकंप के झटके, घरों से निकले लोग

fourthline - October 14, 2022

35 फीसदी अधिक दर पर टेण्डर मंजूर करने के आरोप में पीएचई के ईई...

fourthline - January 7, 2023

8. Sample of the Certificate issued to the participants/Resource Persons

क्रम सं. / Sl. NO.

शिक्षा मंत्रालय MINISTRY OF EDUCATION | G20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय भाषा समिति

Bhartiya Bhasha Samiti

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Education, Government of India

राष्ट्रीय कार्यशाला

National Workshop

प्रमाणित किया जाता है कि.....ने भारतीय भाषा समिति तथा पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 13/02/2023 से 15/02/2023 तक भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक लेखन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया/अपना आलेख प्रस्तुत किया/व्याख्यान प्रस्तुत किया।

This is to certify that.....participated/ presented a paper / addressed in National Workshop on the Topic Research and Acadamic writing in Indian language jointly organized under the aegis of Bhartiya Bhasha Samiti and Pandit Sundarlal Sharma (Open) Univarsity Chhattisgarh, Bilaspur. from13/02/2023 to 15/02/2023.

संयोजक
Convener

शैक्षिक समन्वयक
Academic co-ordinator

प्रमाण-पत्र

9. Conclusion of the Programme

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला जैसे पुनीत कार्य सफलतापूर्वक संपन्न करना एक बड़ी उपलब्धि है। इस कार्यशाला में देश भर से प्रतिभागियों ने गूगल फॉर्म से पंजीयन कराया। कृषि, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, सांख्यिकी, विधि, ईंधन एवं खनन विज्ञान, विज्ञान के अन्य विषय जैसे- रसायनविज्ञान, वनस्पत्ति विज्ञान, जन्तुविज्ञान, जैसे विषयों सहित शिक्षा, राजनीति, हिंदी, इतिहास, संस्कृत, आदि के 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विभिन्न तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों द्वारा जानकारी उपलब्ध करायी गई। प्रतिभागियों में भारतीय भाषाओं में शोध एवं लेखन कार्य करने की उत्सुकता रही है, जो कि इस कार्यशाला की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला से अकादमिक क्षेत्र से जुड़े लोगों और समाज को निम्नलिखित लाभ होंगे-

1. भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन का विकास हो सकेगा।
2. भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को शोधकर्ता अच्छे से उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित हुए है, आशा की जानी चाहए कि कि हम ज्ञान परंपरा को समोन्नत बनाने में आगे बढ़ेगे।
3. प्रतिभागियों ने भारतीय भाषाओं के तकनीकी पक्ष जाना है, जिसका वे अपने अनुसंधान और अकादमिक-लेखन में उसका प्रयोग कर सकेंगे।
4. प्रतिभागियों में भारतीय भाषाओं के प्रति एक भावनात्मक जुड़ाव और एक राष्ट्रीयता का भाव जागृत होगा।
5. प्रतिभागी गण अपने-अपने कार्य क्षेत्र में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का प्रयोग करने से उन भाषाओं

का विस्तार होगा।

10. Recommendations

इस तरह की कार्यशालाएँ लगातार आयोजित की जानी चाहिए ताकि भारतीय भाषाओं को समृद्ध किया जा सके, अमृतकाल में यह आशा की जा रही है कि हम नई शिक्षा नीति 2022 के निर्धारित मानदंडों को प्राप्त कर पाएँगे, लेकिन इसके लिए हम सभी को लगातार प्रयास करना होगा। इस हेतु कार्य करने वाला हो सकता है सुदूर क्षेत्र का हो परंतु उसमें कार्य करने की लालसा बलवती है, तो उसे कार्य हेतु कहा जा सकता है। भारतीय भाषा समिति तथा अन्य केंद्रीय समितियों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि समन्वय कर रहे लोगों से लगातार संपर्क बनाए रखने से राष्ट्रीय स्तर पर उनके विशेषज्ञता का लाभ लिया जा सकता है।

Jaipal Singh

(डॉ. जयपाल सिंह)